डॉ. विजय मिश्र

हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित भौतिक विज्ञानी एवं संस्कृत विद्वान। कवि के तौर पर न्यू इंग्लैंड, दक्षिण एशिया के अनेक देशों में चर्चित एवं सफल यात्राएँ कीं। अनेक गरिमापूर्ण कवि सम्मेलनों में भागीदारी। विगत १८ बरसों से हार्वर्ड विश्वविद्यालय में सालाना भारतीय कविता पाठ का आयोजन कर रहे हैं।

सम्पर्क : १८०, बेडफोर्ड रोड, लिंकन, एमए. ईमेल : misra.bijoy@gmail.com

विमर्श

रामायण : आधुनिक विमर्श

अँग्रेजी से हिन्दी अनुवाद **सुधांशु मिश्रा**

रामायण के शब्द, रस और भाव की थोड़ी-बहुत समझदारी बढ़ सके इस उद्देश्य से अभी एक साल हुए कुछ संस्कृत-प्रेमी साथियों के साथ मैं वाल्मीकि रामायण पढ़ रहा हूं। एक वाक्य में कहना हो तो यही कहना पर्याप्त रहेगा कि वाल्मीकि की कृति एक दिव्य रचना है। इसके शब्दों की गहराई, वाक्य-विन्यास और व्यंजना मेरे जैसे साधारण समझ वाले व्यक्ति के लिए कुछ भारी पड़ती है। प्रत्येक श्लोक अपने में ऐसी पूर्णता लिए है कि दांतों तले अंगुली दबानी पड़े और चित्त तन्मय व मुग्ध अगले श्लोक की प्रतीक्षा में जुट जाए। इतनी सारी बातें वाल्मीकि को भला कैसे पता चलीं? क्या तत्कालीन समाज वाकई वैसा आभामय, परिष्कृत, सुसंस्कृत और भव्य था? वाल्मीकि ने उनका ऐसा बारीक विवरण चित्रित किया है कि मानों सारा कुछ आंखों के सामने घट रहा हो। इतनी कुशलता से राजकीय आडम्बरों, वैभव, मस्ती और आमोद-प्रमोद का वर्णन अनन्यतम ही कहा जाएगा।

ऐसे तो मैं विज्ञान का कार्य करता हूं, फिर रामायण जैसे साहित्यिक कार्य में मन क्यों मुड़ा और रमा? कहना कठिन है, परंतु पिछले तीस सालों से मैं संस्कृत भाषा का अध्ययन कर रहा हूं और उसके अकूत साहित्यिक भंडार में छिपे मोतियों का रसास्वादन करता रहा हूं। कुछ साल पहले यह जानने की इच्छा व उत्कंठा चित्त को व्यग्र करने लगी कि संस्कृत भाषा की उत्पत्ति और इसकी आयोजना कैसे हुई होगी? सोचा कि रामायण पढ़ूं तो स्यात इस उधेड़बुन का कुछ सुराग मिल जाए। बचपन में सुनता था कि रामायण रस का काव्य है, तो मन में प्रश्न उठा कि शब्दों से रस कैसे पैदा होता है? यह जाने, समझे बिना मूल प्रश्न का जवाब नहीं मिल सकेगा।

ऐसे ही अनेक बुनियादी प्रश्नों के साथ सन् २०१३ की पांच मई को स्थानीय साईं मंदिर में मेरे रामायण अध्ययन का आरंभ हुआ। हम कुछेक संस्कृतप्रेमी मित्र महीने में दो बार वाल्मीकि रामायण के करीब दो सौ श्लोकों का पारायण करते हैं, उनका अर्थ गुनने का प्रयास करते हैं और रस में डूबे आगे बढ़ते हैं।

अमेरिका में प्रवासी भारतीय समाज अब स्थापित हो चुका है। लगभग पचास साल पहले जब भारतीयों का यहां

आना आरंभ हुआ, किसे अनुमान था कि घर-बार छोड़ कर लोग अमेरिका में ठहरेंगे? लेकिन भारतीय समुदाय बड़ा जीवटवाला निकला। थोड़े ही समय में इसने पैर जमा लिए और आज वे भिन्न-भिन्न व्यवसायों व नौकरियों में लगे हुए हैं। वे अपेक्षाकृत साधन-सम्पन्न हैं, अलबत्ता, उनकी संस्कृति-चेतना अभी नहीं जग पाई है। संस्कृति के नाम पर थोड़े बहुत मंदिर अवश्य बन गए हैं, परंतु भारत के गहरे, प्रभावी और व्यापक दर्शन और उसके अकूत साहित्य भंडार के प्रति गौरव का भाव प्रवासी भारतीय समुदाय में नहीं पनप पाया है, समालोचना की तो खैर बात ही दूर है। समय के साथ-साथ प्रवासी भारतीय समाज प्रौढ़ हुआ और दूसरी पीढ़ी आगे आने लगी। ये बच्चे देखने में भारतीय जरूर लगते हैं, पर उनके रंग-ढंग दूसरे ही हो गए। इन बच्चों को भारतीय ज्ञान का रसास्वादन हो सके इसकी न व्यवस्था हो पाई, न वातावरण ही बन पाया। अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग वाली कहावत इस प्रसंग में सटीक बैठती है।